Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg

कक्षा 12 अनिवार्य हिंदी

अध्याय 1 संतवाणी

(ब) कृपाराम

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्रश्न 1.कवि ने 'कस्तूरी' व 'चीनी' के माध्यम से मनुष्य के किन गुणों की ओर संकेत किया है?

(अ) आन्तरिक

(ब) बाह्य

(स) आन्तरिक व बाह्य

(द) इनमें से कोई नहीं।

उत्तर:(अ)

लघूत्तरात्मकप्रश्न

प्रश्न 1. "पर जळती निज पाय, रती न सूझै राजिया" पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:प्रस्तुत पंक्ति में कवि का भाव है कि इस संसार में बहुत से लोग ऐसे हैं जो दूसरों में दोष ढूंढते रहते हैं। उनकी कमियों को खोजते हैं। वह अपनी कमियों की तरफ बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं। दूसरों के घर में कलह होने पर वह आनंदित होते हैं। लेकिन अपने घर के झगड़ों के बारे में कभी कुछ नहीं सोचते। जिस तरह से पहाड़ पर लगी हुई आग तो सभी को दिखाई देती है लेकिन अपने पैरों में लगी हुई आग दिखाई नहीं देती है वैसे ही इन लोगों को दूसरों की ही कमियां दिखाई देती है अपने दोष नजर नहीं आते है।

प्रश्न 2 "मुख ऊपर मिठियास, घर माहि खोटा घड़े" पंक्तिको भावार्थ लिखिए।

उत्तर:इस पंक्ति में कवि कृपाराम ने बताया है कि जो व्यक्ति हमारे सामने मीठी-मीठी बातें करते है लेकिन हमारी पीठ पीछे हमारी बुराई करते हैं, ऐसे व्यक्तियों से हमें कभी भी मित्रता का व्यवहार नहीं रखना चाहिए। यह लोग

'मुंह में राम बगल में छुरी' वाली कहावत चरितार्थ करने वाले होते हैं। ऐसे लोग कभी भी विश्वास के योग्य नहीं होते अतः ऐसे लोगों से सावधान रहना चाहिए।

निबन्धात्मक प्रश्न

प्रश्न 1."हिम्मत किम्मत होय.....रद कागद ज्यूं राजिया" दोहे का भावार्थ लिखिए। दोहे के माध्यम से मनुष्य के किस गुण की ओर संकेत किया गया है?

उत्तर:प्रस्तुत सोरठे में कवि ने हिम्मत के महत्त्व को बताया है। हिम्मत की ही कीमत होती है बिना हिम्मत के व्यक्ति कुछ भी नहीं कर पाता है। जो व्यक्ति हिम्मत और साहस से कार्य करता है उसके सभी कार्य सफल होते हैं। उसे कभी भी असफलता नहीं मिलती है। जो व्यक्ति हिम्मत नहीं रखते हैं उनका जीवन बेकार हो जाता है। कवि के अनुसार ऐसे व्यक्ति का जीवन रद्दी कागज के समान होता है जिस में हिम्मत नहीं होती है। हिम्मत का महत्व केवल मनुष्य के लिए ही नहीं वरन छोटे से छोटे जीव के लिए भी होता है। छोटी सी चींटी भी बड़े-बड़े अन्न के कण दूर दूर तक ले जाती है यह चींटी की हिम्मत का ही परिणाम है। अतः मनुष्य को जीवन में हिम्मत, साहस और उत्साह से प्रत्येक कार्य करना चाहिए

प्रस्तुत सोरठे में कवि ने मनुष्य के हिम्मत, साहस, उत्साह, वीरता जैसे गुणों की ओर संकेत किया है।

संकलित सोरठों की सप्रसंग व्याख्याएँ

1.

उपजावै अनुराग, कोयल मन हरखित करै।

कड़वो लागै काग, रसनारा गुण राजिया॥

कठिन शब्दार्थ-उपजावै = उत्पन्न करती है। अनुराग = प्रेम। हरखित = प्रसन्न। कड़वो = कटु, अप्रिय। काग = कौआ। रसना = जीभ, वाणी। राजिया = कवि के सेवक का नाम।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि कृपाराम द्वारा रचित सोरठों से लिया गया है। इस सोरठे में कवि ने मधुर वाणी की

प्रशंसाकौए और कोयल के माध्यम से की है।

व्याख्या-कवि कृपाराम जी वाणी का महत्त्व बताते हुए कहते हैं कि कोयल मीठी वाणी में बोलती है इसलिए वह सबके मन को प्रसन्न करती है और सबके मन को आनंद से भर देती है परंतु कौवा कर्कश वाणी में बोलता है इसलिए वह किसी को अच्छा नहीं लगता है।

अतः हे राजिया यह सब वाणी का ही प्रभाव है कि कोई अपनी वाणी से सब को अपने वश में कर लेता है और कोई अपनी वाणी से सब को दूर भगाता है।

विशेष-

(i) सरल भाषा में कवि ने मधुर वाणी का महत्त्व समझाया है।

(ii) कड़वा बोलने वाले से कोई प्रेम नहीं करता। अत: सदा मधुर वाणी को प्रयोग करना चाहिए, यह सन्देश दिया गया है।

(iii) भाषा सरल राजस्थानी है। शैली नीति-शिक्षणपरक है।

2.

काळी घणी कुरूप, कस्तूरी कांटा तुलै।
सक्कर बड़ी सरूप, रोड़ा तुलै राजिया।

कठिन शब्दार्थ-घणी = बहुत। कुरूप = भद्दी। कस्तूरी = एक अति सुगंधित पदार्थ। काँटा = तराजू, जिसमें सही तोल बताने वाला काँटा लगा होता है। सक्कर = शक्कर, चीनी। सरूप = सुन्दररूप। रोड़ा = पत्थर के टुकड़े। तुलै = तोली जाती है।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि कृपाराम द्वारा रचित सोरठों से लिया गया है। कवि बता रहा है कि वस्तु का महत्त्व और मूल्यगुणों के आधार परनिश्चितहोताहै सुन्दरता से नहीं ।

व्याख्या-कवि कृपाराम कहते हैं कि कस्तूरी काली होती है लेकिन फिर भी सोने चांदी को बेचने वाले कांटे से तोली जाती है। जबकि शक्कर बहुत सफेद होती है लेकिन वह पत्थर के बाटों से तोली जाती है। कवि कहता है कि गुणों का ही मोल होता है रूप सौंदर्य मूल्यवान नहीं होता है कवि कस्तूरी और शक्कर के माध्यम से मनुष्य को

संदेश देता है कि गुणों का मोल होता है रंग रूप का कोई मोल नहीं होता है जो गुणवान है वह भले ही कुरूप हो उसका सब जगह सम्मान होता है

विशेष-

(i) सोरठे में निहित सन्देश यह है कि बाहरी रूप-रंग लुभावना होने से ही कोई वस्तु मूल्यवान नहीं हो जाती है। उसके गुण ही उसका मूल्य निश्चित किया करते हैं। अत: मनुष्य को गुणवान बनना चाहिए।

(ii) कवि ने अन्योक्ति के माध्यम से बड़ी महत्त्वपूर्ण नीति की शिक्षा दी है।

(iii) 'काली घणी कुरूप, कस्तूरी काँटा तुलै।' में अनुप्रास अलंकार है।

3.

डूँगर जळती लाय, जोवै सारो ही जगत।
पर जळती निज पाय, रती न सुझै राजिया॥

कठिन शब्दार्थ-डूंगर = पहाड़। लाय = आग। जोवै = देखता है। पाय = पैर। रती = तनिक भी। न सूझै = दिखाई नहीं देती।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि कृपाराम द्वारा रचित सोरठों से लिया गया है। इस सोरठे में कवि उन लोगों पर व्यंग्य कर रहा है जो दूसरों की कलह और विवाद को देखकर आनन्दित हुआ करते हैं।

व्याख्या-कवि अपने सेवक राजिया को सम्बोधित करते हुए कहता है कि दूर पर्वत पर जलती आग को सारा संसार बड़े आनन्द के साथ देखा करता है किन्तु लोगों को अपने पैरों के पास लगी आग तनिक भी दिखाई नहीं देती। भाव यह है कि लोग दूसरों के बीच हो रही कलह और विवाद को देखकर मन ही मन प्रसन्न हुआ करते हैं पर उन्हें अपने ही घर की कलह और विवाद का ध्यान नहीं आता।

विशेष-

(i) कवि का आशय यह है कि दूसरों के दोषों पर दृष्टि डालने से पहले व्यक्ति को अपने भीतर भी झाँक कर देखना चाहिए कि स्वयं उनके भीतर कितने दोष भरे हुए हैं।

(ii) सन्त कबीर का भी यही मत है- जो दिल खोजा आपना, मुझ से बुरा न कोय।

(iii) सरल राजस्थानी भाषा का प्रयोग है।

(iv) शैली व्यंग्यात्मकं और उपदेशात्मक है।

4.

मतलब री मनवार, चुपकै लावै चूरमो।
बिन मतलब मनवार, राबन पावै राजिया॥

कठिन शब्दार्थ-मतलब = स्वार्थ। री = की। मनवार = मनुहार, मनाना। चुपकै = चुपचाप। चूरमो = चूरमा, बाटी को मसल कर और घी-शक्कर मिलाकर बनाया गया स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ। राब = राबड़ी/साधारणभोजन।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजिया रा सोरठा' से लिया है जिसके रचयिता कवि कृपाराम खिड़िया है।कवि ने मतलबी लोगों के मतलब निकलने से पहले तथा मतलब निकलने के बाद के व्यवहार वर्णन किया है।

व्याख्या-कवि अपने सेवक राजिया को संबोधित कर कहता है कि हे राजिया मतलबी लोगों का व्यवहार समय और परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होता है। जब उन्हें किसी से मतलब होता है या अपना कोई काम करवाना होता है तब वे उनके लिए 'चूरमा' अर्थात उनकी मनचाही वस्तु लाते हैं। उनकी खुशामद करते हैं। लेकिन जब उनका काम निकल जाता है तब भी उन्हें पूछते भी नहीं है और छोटी से छोटी चीज भी नहीं देते हैं ना ही उनसे किसी तरह का मेलजोल रखना चाहते हैं। कवि कहता है कि ये राजिया यह सब मतलब की ही मनुहार होती है मतलब निकल जाने के बाद सद्व्यवहार समाप्त हो जाता है।

विशेष-

(i) कवि अपने पाठकों को सावधान कर रहे हैं कि स्वार्थी लोगों द्वारा खुशामद किए जाने पर सतर्क हो जाना चाहिए और उनके उपहार को सोच-समझकर ही स्वीकार करना चाहिए।

(ii) बड़ी सरल भाषा में कवि ने लोक व्यवहार की सीख दी है।

(iii) शैली उपदेशात्मक तथा व्यंग्यात्मक है।

5.

मुख ऊपर मिठियास, घट माँहि खोटा घडै।

इसड़ां सू इखळास, राखीजै नहिं राजिया॥

कठिन शब्दार्थ-मिठियास = मीठी बातें। घट = मन, हृदय। माँहि = में। खोटा = कुटिल, चालाक। घड़े = बहुत। इसड़ां = ऐसे। सू = से। इखल्लास = मित्रता। राखीजै = रखिए।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजिया रा सोरठा' से लिया है जिसके रचयिता कवि कृपाराम खिड़िया है। कवि अपने सेवक राजिया को उन लोगों से सावधान रहने की सीख दे रहा है जो मुख से तो मीठा बोलते हैं किन्तु हृदय में छल-कपट रखते हैं।

व्याख्या-कवि कहता है कि हे राजिया जो लोग तुम्हारे सामने तो मीठी मीठी बातें करते हैं लेकिन अपने हृदय में तुम्हारे प्रति बैर भाव रखते हैं। ऐसे लोगों से तुम्हें कभी भी अपनत्व का भाव नहीं रखना चाहिए। ऐसे लोग कभी भी धोखा दे सकते हैं। यह लोग 'मुंह में राम बगल में छुरी' वाली कहावत को चरितार्थ करने वाले होते हैं इसलिए इनसे दूर रहना ही उचित है।

विशेष-

(i) मुँह में राम बगल में छुरी' यह लोकोक्ति इस सोरठे में प्रत्यक्ष हो रही है।

(ii) कवि ने राजिया के माध्यम से सभी को लोकव्यवहार की शिक्षा दी है।

(iii) भाषा मिश्रित शब्दावली युक्त है।

(iv) शैली उपदेशात्मक है।

6.

साँचो मित्र सचेत, कह्यो काम न करै किसो।

हरि अरजण रै हेत, रथ कर हाँक्यौ राजिया।

कठिन शब्दार्थ-साँचो = सच्चा, हितैषी। सचेत = तत्पर, तैयारे। कह्यो = कहा हुआ। किसो = कैसा भी। हरि = श्रीकृष्ण। अरजण = अर्जुन। रै = के!

हेत = लिए, प्रेम से। कर = हाथ।
हाँक्यौ = हाँको, चलाया।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजिया रा सोरठा' से लिया है जिसके रचयिता कवि कृपाराम खिड़िया है। कवि राजिया को सच्चे मित्र का स्वभाव बता रहा है।

व्याख्या-कृपाराम राजिया को समझा रहे हैं कि जो सच्चा मित्र होता है, वह सदा मित्र का हित करने को तैयार रहता है। वह मित्र द्वारा बताए गए हर काम को करने को तत्पर रहा करता है। देख लो, भगवान कृष्ण ने महाभारत के युद्ध में अर्जुन से सच्ची मित्रता के कारण ही अपने हाथों से उसका रथ हाँका था।

विशेष-
(i) कवि ने श्रीकृष्ण को मित्रता का आदर्श बताया है। मित्रता की खातिर ही द्वारकाधीश कृष्ण ने, अर्जुन का सारथी बन कर उसका रथ हाँको। उनके स्तर के अनुसार इस घटिया कार्य को करने में उन्हें कोई संकोच नहीं हुआ।
(ii) सरल राजस्थानी भाषा में कवि ने सच्चे मित्र के लक्षणों का परिचय कराया है।
(iii) सोरठे में अनुप्रास तथा दृष्टान्त अलंकार हैं।

7.
हिम्मत किम्मत होय, बिन हिम्मत किम्मत नहीं।
करै न आदर कोय, रद कागद ज्यूं राजिया।

कठिन शब्दार्थ-हिम्मत = साहस, कठिन काम करने की इच्छाशक्ति। किम्मत = कीमत, महत्त्व, सम्मान। रद = रद्दी, बेकार। कागद = कागज। ज्यूँ = जैसे।

सन्दर्भ तथा प्रसंग-प्रस्तुत सोरठा हमारी पाठ्यपुस्तक में संकलित कवि कृपाराम द्वारा रचित सोरठों से उधृत है। कवि इस सोरठे में राजिया को जीवन में साहस का महत्त्व समझा रहा है।

व्याख्या-कवि राजिया से कहता है कि समाज में सब साहसी व्यक्ति का ही सम्मान किया करते हैं। साहसहीन व्यक्ति की समाज में कोई कीमत नहीं होती। उसे कोई महत्त्व और सम्मान नहीं देता। उसकी स्थिति रद्दी कागज

जैसी हुआ करती है जिसे लोग उपेक्षा से फेंक दिया करते हैं॥

विशेष-

(i) जीवन में जो लोग चुनौतियों और समस्याओं का सामना करने की हिम्मत नहीं जुटा पाते, उनकी कोई पूछ नहीं होती। अत: व्यक्ति को साहसी बनना चाहिए। सोरठे में कवि यही सन्देश दे रहा है।

(ii) भाषा में राजस्थानी के साथ उर्दू के हिम्मत, किम्मत तथा रद शब्दों का प्रयोग, कथन को प्रभावी बना रहा है।

(iii) सोरठे में अनुप्रास तथा उपमा अलंकार हैं।

Join Telegram-
https://t.me/bhartibhandar

Our Website-
https://thehindipage.com/blog/

Join Telegram-
https://t.me/siddhivinayakpariwarsangaria

Our Youtube Channel-
https://www.youtube.com/channel/UCJlUDM0uPIL7kEO0ZMdDcHg